International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(5): 113-116

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(5): 113-116
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-07-2023
Accepted: 22-08-2023

Dr. Shahnaz Kureshi
Independent Researcher, Department of Sanskrit, Jamia Millia Islamia, New Delhi, India

Corresponding Author:
Dr. Shahnaz Kureshi
Independent Researcher, Department of Sanskrit, Jamia Millia Islamia, New Delhi, India

ग़ालिब काव्यम् में दर्शन

Dr. Shahnaz kureshi

सारांश
मिर्ज़ा ग़ालिब एक विश्व विख्यात शायर हैं । उनकी ग़ज़लों का संग्रह 'दीवान – ए ग़ालिब' का विश्व की कई भाषाओं में अनुवाद हो चुका है । ग़ालिब के दीवान या संग्रह का संस्कृत भाषा में अनुवाद करने का पुनीत कार्य आधुनिक संस्कृत साहित्य के नक्षत्र डॉ. जगन्नाथ पाठक जी ने किया है । चूँकि ग़ज़लों में प्रत्येक शेर में एक भिन्न विषय वर्णित होता है अतः ग़ालिब काव्यम् में भी जीवन के विभिन्न पक्षों पर आधारित पद्य हैं जिनके द्वारा ग़ालिब की सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक सोच का बोध होता है । मिर्ज़ा ग़ालिब के दर्शन से सम्बन्धित शेरों में जिस विचारधारा का प्रस्फुटन हुआ है, डॉ. जगन्नाथ पाठक ने उसे वेदान्त से रूपांतरित किया है । जब भी ग़ालिब ईश्वर, जगत, आत्मा तथा प्रकृति से सम्बन्धित अपने शेरों के माध्यम से कोई भी बात कहते हैं डॉ. उस सम्बन्धित शेर को वेदान्त सम्बन्धी शब्दों के साथ आर्या छंद में संस्कृतज्ञों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं । प्रस्तुत शोध पत्र संस्कृतज्ञों हेतु ग़ालिब की दर्शन सम्बन्धी विचारधारा के प्रस्तुतीकरण हेतु लिखा गया है।

कूटशब्द: संस्कृत में मिर्ज़ा ग़ालिब, ग़ालिब काव्यम्, ग़ालिब काव्यम् और डॉ. पाठक, ग़ालिब काव्यम् और वेदान्त, मिर्ज़ा ग़ालिब का दर्शन ।

प्रस्तावना
निःसंदेह ग़ालिब की लोकप्रियता वस्तुतः इश्क़िया कलामों के कारण सर्वाधिक है किन्तु उन्होंने मात्र शृङ्गारिक वर्णन ही नहीं किया है अपितु जीवन के विविध पक्षों को अपने शेरों के माध्यम से कहा है । उनके दर्शन सम्बन्धी शेर भी अत्यन्त उत्कृष्ट हैं । जब मिर्ज़ा ग़ालिब ने अपने कवि हृदय को अपनी पीड़ा और मानव जीवन की दुविधाओं को वर्णित करने के लिये प्रयोग किया तो उनके साहित्य में दार्शनिक विचार अपना स्थान बनाने लगे । किन्तु उनका उद्देश्य किसी दर्शन विशेष की व्याख्या करना नहीं था अपितु स्वयं की आपबीती को व्यक्त करना मात्र था । वे वस्तुतः सूफी शायर नहीं थे किन्तु उन्होंने अपनी धर्म सम्बन्धी जिस विचारधारा को व्यक्त किया है वे शेर दर्शन की दृष्टि से अत्यन्त उत्कृष्ट हैं ।

आधुनिक संस्कृत साहित्य को अपने विशेष कार्यों से सुशोभित करने वाले अनुसर्जक एवं नूतन चिन्तनधारा के प्रणेता डॉ. जगन्नाथ पाठक आधुनिक संस्कृत साहित्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं। उन्होंने उर्दू साहित्य के विश्व विख्यात शायर मिर्ज़ा ग़ालिब की अमर कृति 'दीवान – ए – ग़ालिब' का संस्कृत में अनुवाद किया है जिस कारण संस्कृतज्ञों को भी ग़ालिब के दर्शन सम्बन्धी विचारों को जानने एवं समझने का अवसर प्राप्त हुआ है ।

भारतीय दर्शन दो भागों में विभाजित है प्रथम आस्तिक दर्शन, जिसके अंतर्गत सांख्य योग, न्याय वैशेषिक, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा (वेदान्त) सम्मिलित हैं । द्वितीय नास्तिक दर्शन, जिसके अंतर्गत जैन, बौद्ध और चार्वाक दर्शन की गणना की जाति है । ग़ालिब काव्यम् के अध्ययन के उपरांत यह निश्चित हो जाता है कि ग़ालिब का उद्देश्य दर्शन की गहराई में उतरकर तर्क वितर्क करना नहीं था अपितु वे तो तत्कालीन समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के आडंबरों व रूढ़ियों के साथ साथ धार्मिक भेदभाव के पूर्णतः विरुद्ध थे । निःसन्देह वे सूफ़ीवाद से अत्यन्त प्रभावित थे । उन्होंने कहा भी है कि एक शायर को तसव्वुफ़ शोभा नहीं देता तथापि उन्होंने तत्कालीन सामाजिक बुराईयों एवं धार्मिक आडंबरों से बचने के लिये सूफ़ीवाद को यत्र तत्र अपने शेरों में कहा है । और उन शेरों के द्वारा धार्मिक आडम्बरों पर तीव्र चोट की है । वास्तविकता में वे सृष्टि के विभिन्न रूपों में एक ही परम सत्ता को स्वीकारते थे । वस्तुतः वे 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः' को मानने वाले शायर थे ।ग़ालिब को हम निश्चित रूप से दार्शनिक तो नहीं कह सकते किन्तु कुछ शेरों में उनके सूक्ष्म और चिन्तन प्रधान विचार पुंज को देखकर यह कहा जा जा सकता है कि वे एक गहन चिंतक थे । किन्तु उनकी इस प्रकार की अभिव्यक्तियाँ एक तत्त्ववेत्ता के उद्गार नहीं हैं । इस्लामिक एकेश्वरवाद भारतीय दर्शन की अद्वैतवादी विचारधार से समानता में निकट है अतः एक शेर के रूपांतरण में पाठक जी ने ग़ालिब की विचारधारा का उल्लेख 'वेदान्त' लिखकर स्पष्ट कर दिया है –

कुछ न की, अपने जुनूने नारसा ने, वर्न: याँ
जर्र: ज़र्र: रूकशे खुर्शीदि 'आलं ताब' था[1]
प्राप्तुमशक्तेन कृतं न ममोन्मादेन किञ्चिदप्यत्र ।
प्रत्येकमन्यथा कण आसीत् सूर्य प्रतिस्पर्धी[2] ।।

ग़ालिब कहते हैं कि दुनिया का कण कण उस के जलवों से रोशन था चूँकि हमारे जुनून की कहीं पहुँच न थी इसलिये हम उस के जलवों से अपने आपको रोशन न कर सके । इस शेर की पाद टिप्पणी में पाठक जी ने नारसा का अर्थ 'प्राप्तुमशक्त:, अपरिपक्व उन्माद: , ज़र्र: का अर्थ कण और 'आलम ताब' का अर्थ जगत्प्रकाशक: सूर्य इव प्रकाशवान किया है ।

ग़ालिब की न तो जीवनशैली ऐसी थी और न ही उनकी शायरी कि हम उन्हें एक दार्शनिक घोषित कर सकें विश्व में ऐसे कई कवि हुये हैं जिन्होंने एक जीवन दर्शन दिया है किन्तु वे दार्शनिक नहीं थे वे लोगों के बीच भी एक पथ प्रदर्शक कवि के रूप में स्वीकार किये गये । ऐसे कवि सत्य के साधक होने के कारण एवं जीवन शोधन को साध्य के रूप में स्वीकार करने के कारण बहुत से कटु अनुभवों से दो चार होते हैं। प्रतिक्रियास्वरूप वे अपने साहित्य में अपनी बात रखते हैं या उस अनुभूत पीड़ा को व्यक्त करते हैं । उनके ये अनुभव लोगों के लिये जीवन जीने की कला बन जाते हैं । ग़ालिब का जीवन भी इसी प्रकार का था । उन्की प्रकृति तत्त्व विवेचना करने वाली नहीं थी । उन्हें इस ओर शायरी करने का कोई शौक नहीं था । वे तो वस्तुतः एक गज़ल करने वाले शायर थे । निःसंदेह ग़ालिब की लोकप्रियता वस्तुतः इश्क़िया कलामों के कारण सर्वाधिक है किन्तु उन्होंने मात्र श्रृंङ्गारिक वर्णन ही नहीं किया है अपितु जीवन के विविध पक्षों को अपने शेरों के माध्यम से कहा है । उनके दर्शन सम्बन्धी शेर भी अत्यन्त उत्कृष्ट हैं। उनके शेरों में मुख्य रूप से सूफी व वेदान्त दर्शन अभिव्यंजित हुआ है किन्तु वे सूफी शायर नहीं थे । उन्होंने अपनी धर्म सम्बन्धी जिस विचारधारा को व्यक्त किया है वे शेर दर्शन की दृष्टि से अत्यन्त उत्कृष्ट हैं और उससे भी उत्कृष्ट है पाठक जी द्वारा किया गया रूपांतरण -

उसे कौन देख सकता, यगान: है वह यकता
जो दुई की बू भी होती, तो कहीं दुचार होता[3]
सोऽस्त्य नुपमोऽद्वितीय: प्रेक्षितुमीष्टे क एव तं लोके
दृष्येत क्वचिदपि चेत् स्याद्वैतत्वस्य गंधोऽपि[4] ।।

अर्थात् ग़ालिब कहते हैं कि उस परम सत्ता को कौन देख सकता है अर्थात् कोई नहीं । क्योंकि वह अनुपम एवं अद्वितीय और अकेला है । यदि उसके भीतर द्वैत की बू भी होती तो कहीं न कहीं सामना अवश्य होता ।

कह सके कौन, कि ये जल्व:गरी किसकी है
पर्द : छोड़ा है वह उसने, कि उठाए न बने[5]
क: प्रभवेदभिधातुं यदहं कस्यास्तयहो चमत्कार: ।
तदिदं किमपि रहस्यं न स्फुटतां शक्यमिह नेतुम्[6] ।।

---

[1]ग़ालिबकाव्यम् -जगन्नाथ पाठक, , प्रथम संस्करण – 2003, प्रकाशक – दास पब्लिशर्स 20, डी बेली रोड, इलाहाबाद – 211002, पृष्ठ - 38

[2]वही, पृष्ठ – 39

[3]ग़ालिबकाव्यम् -जगन्नाथ पाठक, , प्रथम संस्करण – 2003, प्रकाशक – दास पब्लिशर्स 20, डी बेली रोड, इलाहाबाद – 211002, पृष्ठ – 52

[4]वही, पृष्ठ – 53

[5] ग़ालिबकाव्यम् -जगन्नाथ पाठक, , प्रथम संस्करण – 2003, प्रकाशक – दास पब्लिशर्स 20, डी बेली रोड, इलाहाबाद – 211002,पृष्ठ – 500

[6] वही, पृष्ठ – 501

अर्थात् ग़ालिब कहते हैं कि खुदा ने अपने जलवों और हमारी दृष्टि के मध्य ऐसा पर्दा डाल रखा है जिसे हम हटा नहीं सकते अतः हम उसके वास्तविक जलवों को जान ही नहीं सकते । तात्पर्य यह है कि इस समस्त ब्रह्मांड के निर्माता ने इस समस्त सृष्टि का निर्माण कर अपनी उपस्थित के संकेत दिये हैं किन्तु वह हमें दिखाई ही नहीं दे सकता अतः हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि ये सारे कार्य किसके द्वारा किये गये हैं ।

थक थक के, हर मकाम पे दो चार रह गये
तेरा पत: न पाए, तो नाचार क्या करें[7]
प्रत्येकं विश्रामागारे द्वित्रा अवस्थिता: श्रान्ता: ।
संङ्केतं न लभेमहि तव चेद् विवशा नु किं कुर्म:[8] ।।

पाठक जी ने इस शेर के रूपांतर में मकाम को विश्रामागारे और नाचार को विवशा से रूपांतरित किया है ।

असले शुहूद – ओ – शाहिद – ओ – मशहूद एक है
हैराँ हूँ, फिर मुशाहिद: है किस हिसाब में[9]
मूलमुपस्थित – दर्शक – दृश्याणामेव हन्त यत्किञ्चित।
तद् दर्शनस्य गणना कुतोऽस्ति पुनरित्यहं चकित:[10]।।

जब दर्शनीय, दृश्य और दर्शक सब उसी का अंश है तो फिर देखना क्या है । तात्पर्य यह है कि जिसे देखना है, जो दिखाई दे रहा है और स्वयं देखने वाला सब उसी के अंश हैं तो फिर हमें उसे देखने की लालसा क्यों है क्योंकि जो कुछ भी हमारे सामने उपस्थित है सब वही तो है ।
कुछ शेर दार्शनिक दृष्टि से अत्यन्त उत्कृष्ट हैं जिनमें भक्त का अपने भगवान के प्रति पूर्ण समर्पण भाव है । पाठक जी ने इन भावों को पूर्ण भक्तिभाव रस से पूर्ण शब्दों में रूपांतरित किया है । जब ग़ालिब ईश्वर की सर्वव्यापकता का वर्णन करते हैं और भक्तिमार्ग में 'अहंभाव' को बाधा सिद्ध करते हुये व्यक्ति के पतन का कारण 'अहंभाव' को बताते हैं तब पाठक जी के रूपांतरण देखते ही बनते हैं । यहाँ पाठक जी यह सिद्ध कर देते हैं कि वास्तविकता में वे अनुवादक का नहीं अपितु अनुसृजन का कार्य कर रहे हैं। ऐसे शेरों के रूपांतरणों को पढ़कर पाठक को स्वतः अनुभूति होती है कि भेद भाषामात्र का ही है भक्त यदि वास्तविकता में भक्तिमार्गीय बनकर ईश्वर से प्रेम का दावा करता है तो सर्वप्रथम उसे अंतर्मन में व्याप्त अहंभाव को पूर्णतः समाप्त करना ही होगा –

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता, तो खुदा होता
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो तो क्या होता[11]
किञ्चिन्नासीदासीदीश: स्यादसति सोऽथ कस्मिंश्चित् ।
क्षपितोऽस्तित्वेनाहं न स्यां यदि किन्ततश्छिन्नम्[12] ।।

ग़ालिब के कुछ सूफियाना शेर भारतीय दर्शन के अनुभूति वाक्य 'अहं ब्रह्मास्मि' की अनुभूति कराते हैं और पाठक जी ने उनके इस भाव को कुशलता पूर्वक रूपांतरित किया है –

दिले हर क़तर: है साज़े अनल बह्र
हम उसके हैं, हमारा पूछना क्या[13]
सागर एषोऽस्मीति प्रत्येकं बिन्दुर्हन्त सङ्गीतम्
अहमेष तस्य वर्ते प्रष्टव्यं किन्नु मद्विषये [14]।।

अर्थात् हमारे हृदय रूपी बूँद उस ईश्वर रूपी समुद्र का हिस्सा है और हम उस से संयुक्त हैं । तात्पर्य यह है कि हम में और ईश्वर में कोई अन्तर नहीं है ।
ग़ालिब का मानना था कि इस जगत में जो कुछ भी है वह परम सत्य का आलोक है व्यक्ति का अस्तित्व अपने अहंकार के अतिरिक्त कुछ भी नहीं । चूँकि समस्त सृष्टि अ द्वैत द्वारा निर्मित है और अद्वैत नश्वर नहीं है अतः समस्त ब्रह्माण्ड भी नश्वर नहीं हो सकता । वे अपने फारसी ग्रंथ 'मेहर – ए – नीम' में यह विचार प्रकट करते हुये कहते हैं कि ईश्वर के अस्तित्व के बिना जगत के अस्तित्व की कल्पना करना मात्र भ्रम है । प्रलय के उपरान्त एक नये आदम का जन्म होगा और पुनः दूसरे आदम का और यह संसार इसी प्रकार चलता रहेगा । ग़ालिब ईश्वर को सम्बोधित करते हुये कहते हैं कि स्वयं ईश्वर ने दूसरे ईश्वरों के भ्रम के द्वारा संसार में हलचल मचा रखी है । आगे वे कहते हैं कि ये दु:ख दर्द भी वहीं से आये हैं ताकि व्यक्ति सुखद क्षणों का आनंद उठा सके । जीवन की समस्यायें व्यक्ति की परीक्षायें हैं ताकि मित्र शत्रुओं की दृष्टि से बचे रहें और व्यक्ति के जीवन में काँटे इसीलिये बिछाये जाते हैं ताकि घावों का उपचार किया जा सके । इस प्रक्रिया से गुज़रने के बाद व्यक्ति के पाप भी पुण्य में परिवर्तित हो जाते हैं, अपूर्णता और पूर्णता का भाव समाप्त होकर पदार्थ

[7] वही, पृष्ठ – 268

[8] वही, पृष्ठ – 269

[9] ग़ालिबकाव्यम् -जगन्नाथ पाठक, , प्रथम संस्करण – 2003, प्रकाशक – दास पब्लिशर्स 20, डी बेली रोड, इलाहाबाद – 211002, पृष्ठ – 252

[10] वही, पृष्ठ – 253

[11] वही, पृष्ठ – 86

[12] ग़ालिबकाव्यम् -जगन्नाथ पाठक, , प्रथम संस्करण – 2003, प्रकाशक – दास पब्लिशर्स 20, डी बेली रोड, इलाहाबाद – 211002, पृष्ठ – 87

[13] वही, पृष्ठ – 56

[14] वही, पृष्ठ – 57

और आत्मा, जीवन और मृत्यु सब एकत्व में सम्मिलित हो जाते हैं । रीति रिवाज और धार्मिक आडम्बरों का त्याग स्वतः ही ईमान (विश्वास) का अङ्ग बन जाते हैं । प्रसन्नता और उदासी का अन्तर पूर्णतः समाप्त हो जाता है और व्यक्ति स्थितप्रज्ञ की स्थिति को प्राप्त कर लेता है । यह सिद्धान्त कुछ अद्वैतवाद के समान है तो कुछ इसकी शाखायें प्राचीन यूनानी दर्शन के हेलेनी काल का अन्तिम संप्रदाय नव प्लेतोवाद से जा मिलती हैं यह दर्शन एक परम सत्ता उसके निर्गुणत्व संसार की विरक्ति और समस्त गुणों से सजी हुइ एक परम सत्ता के विचारों पर आधारित है । जब इसमें ईरानी विचारधारा मिल जाती है तो यह दर्शन आनंदप्रदाता भी बन जाता है । इस दर्शन को अपनाने का साहस वही व्यक्ति कर सकता है जिसमें सांसारिक आकांक्षाओं को त्यागने का साहस हो । तदुपरान्त ही वह इस प्रकाश को प्राप्त कर सकता है ।

सन्दर्भ

1. गालिबकाव्यम्-जगन्नाथ पाठक, पृष्ठ-90, प्रथम संस्करण – 2003, प्रकाशक – दास पब्लिशर्स 20, डी बेली रोड, इलाहाबाद – 211002
2. कापिशायिनी- डॉ. जगन्नाथ पाठक, प्रकाशन वर्ष-1980, प्रधान संपादक- डॉ.. गयाचरण त्रिपाठी
3. मृद्विका – डॉ. जगन्नाथ पाठक, प्रधान सम्पादक – डॉ. गयाचरण त्रिपाठी ,संस्करण वर्ष 1983, प्रकाशक - गङ्गानाथझाकेन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्, चंद्रशेखर आजाद पार्क, प्रयाग
4. पिपासा - डॉ. जगन्नाथ पाठक, प्रधान सम्पादक - डॉ. गयाचरण त्रिपाठी, प्रथम संस्करण, प्रकाशन वर्ष - 1987 , प्रकाशक - गङ्गानाथझाकेन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्, चंद्रशेखर आजाद पार्क, प्रयाग
5. अनुवाद प्रक्रिया- डॉ. रीता पालीवाल,द्वितीय संस्करण – 1992, प्रकाशक – ललित प्रकाशन, 29/59 – ए , गली न. 11, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली – 110032
6. आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा – डॉ. मंजुलता शर्मा, प्रथमसंस्करणम् 2011 प्रकाशक – कुलसचिव:, राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालय:) (भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्) 56 – 57, इंस्टीट्यूशनलएरिया, जनकपुरी, नवदेहली – 110058
7. आधुनिकसंस्कृतसाहित्येतिहास: - डॉ. रामकुमारदाधीच:, संस्करण वर्ष 2018, प्रकाशक हंसा प्रकाशन, 57 नाटाणी भवन, मिश्रराजाजी का रास्ता, चांदपोल बाज़ार, जयपुर 302001